26/08/2016

आर्थिक, वैज्ञानिक क्रांति का आधार - हमारी गाय

आजकल गायपर उलटी सुलटी चर्चाएं हो रही है । गोरक्षा के विरोध मे गोमांस खानेवाले कुछ ज्यादा ही टिका कर रहे है । हमारा कहना है की, यह स्थिती खतरनाक है, इसलिए सच्चाई जानना जरुरी है । क्योंकि इस विषय का संबंध मेरे हर देश वासी से है । जो जानकारी मैं आपको दे रहा हूँ वह **First-hand** है । यह आपको मालामाल बना सकती है । जो मैंने किया वही बता रहा हूँ । दुनिया की कोई भी किताब में शायद ये जानकारी ना हो ।

Q.1 आप चाहते क्या हो ?

Ans : आम आदमी चाहता है, पहला-सुख निरोगी काया, दूसरा- सुख घर मे माया, तिसरा - खुश बुद्धिमान बच्चे । हम चाहते है, हम और हमारा देश सुखी, समृद्ध, शक्तिशाली एंवम बुद्धिमान एंवम आर्थिक महाशक्ति हो ।

Q.2 इसका किससे संबंध है ?

Ans : इसका संबंध हर व्यक्ति फिर वह महिला हो या पुरुष, व बच्चे हो या बूढ़े हर उस व्यक्ति से है जो सुखी स्वस्थ समृद्ध जीवन जीना चाहता है ।

इसका संबंध हमारे माननीय प्रधान मंत्रीजी से है, हर देशवासी से है, राष्ट्रीय स्वयं सेवक के माननीय सरसंघचालक से है । माननीय मुख्यमंत्री से है, भूतल परिवहन मंत्री माननीय श्री नितिन जी गडकरी से है, हर किसान से, हर उद्योजक से, हर वैज्ञानिक से, हर भारतीय से है जो देश को आर्थिक एंवम बौद्धिक महाशक्ति बनाना चाहता है । हर उस व्यक्ति से है जो समृद्ध, संपन्न एवं स्वस्थ जीवन जीना चाहता है । इसका संबंध काँग्रेस एवं हर राजनितिक पार्टी से है, जो देश को समृद्ध

एवं बलशाली बनाना चाहते है । अखिल भारतीय गौसेवा समिति की स्थापना महात्मा गांधी ने की थी, एवं गोहत्या बंदी के लिए आदरनीय विनोबा भावे ने अपना जीवन त्याग दिया था । इसलीये ये किसी पार्टी विशेष का मुद्दा नहीं है ।

Q.3 आज के विकास का परिणाम क्या है ?

Ans : 1) हमारी हवा प्रदूषित याने सीधी भाषा में ख़राब हो चूकि है ।

2) हमारा पानी प्रदूषित हो चूका है । ज्यादातर कुओं का पानी पिनेलायक नहीं रहा । नाग नदी जिसमे पुराने लोग कहते है कि लोग तैरते थे, क्या आज वह इस लायक है ?

3) हमारी जमीन प्रदूषित हो चूकि है, उसकी उत्पादन क्षमता कम हो रही है, और अनाज, सब्जियां, फल पहले जैसे स्वास्थवर्धक नहीं है।

4) हमारा अन्न प्रदूषित हो चूका है और प्रदूषित अन्न खाकर पेट ख़राब रहता है और "जिसका पेट ख़राब उसका दिमाग ख़राब" ऐसा डॉक्टर कहते है ।

Q.4 क्या यही विकास है ?

Ans : हम सब उधार लेकर विकास कर रहे है, हम विदेशो से उधार लेकर विकास कर रहे है । उधार लेना आसान है चुकाना मुश्किल । हमारी बिजली जो कोयले से बनती है और जिसमे घटिया कोयले से प्रदुषण बढ़ रहा है और साथ साथ कई बीमारियाँ भी बढ़ रही है ।

यह विकास है या विनाश **??**

Q.5 हमें कैसा विकास चाहिए ??

Ans : ऐसा विकास चाहिए जिसमे हवा शुद्ध हो, पानी निर्मल हो, खाना स्वास्थवर्धक हो। हर हाथ को काम हो, हर नौजवानों को गाव में ही इतना काम मिले की वह शहर की ओर जाने की न सोचे हमारा देश इतनी तेजी से आगे बढ़ सकता है, इतने कम समय में की दुनिया सोचती रह जाए। विकास के नाम पर विनाश की और जो हम बढ़ रहे है उसे फिर से सही दिशा में मोड़ना होगा।

Q.6 यह योजना क्या है ?

Ans : इस के लिए हमें हमारे अनमोल कभी न खत्म होने वाले खजाने को पहचानना है। देशी गोवंश को समझना है।

हर गोवंश हमें दूध या श्रम के अलावा दो से चार हजार रुपये महीना नेट इनकम दे सकता है ये हमें इसके आर्थिक सत्य के अभ्यास के आधार पर जानना होगा, समझना होगा इसे आप आँख खोल कर समझे, आँख मूंद कर नहीं। आप देखना, या समझना चाहे तो प्रैक्टिकल के साथ हम आपको सामझ सकते है। थोड़ा समय देना होगा।
विकास के नाम पर हमने विनाश का रास्ता चुना है, इसे हमें विज्ञान के माध्यम से फिर से सही दिशा में मोड़ना होगा।

कैसे ???

सिर्फ देशी गोवंश **को पलना, समझना और संवर्धन करना है** । उसके गोबर और गोमुत्र का खेती में उपयोग करना है। गोबर से अपने ही खेतपर देशी केंचुआ खाद या जीवामृत बनाना है। इस गोवंश के गोबर से हम रसोईघर के लिए गैस, बिजली के लिए भी गैस बना सकते है। जो जमीन की सोई हुई शक्तियोंको बढ़ाएगा, जिससे आपका खाना स्वास्थ्यवर्धक होगा, पानी शुद्ध होगा, जमीन का प्रदुषण घटेगा, दिमाग भी स्वस्थ रहेगा, तो हम तेजीसे आगे बढ़ सकते है। देशी गायका दूध पिकर हम और हमारे बच्चे स्वस्थ एवंम बुद्धिमान होंगे। आपको यह जानना

होगा । और भी कई उपयोग है वह यहाँ इतने कम समय में, और कागज़ पे बताना मुश्किल है ।

समझ लिजिये, इसका संबंध दूर दूर तक राजनिती से नहीं है । राजनिती लाने से हम मूल विषय से भटक जायेंगे । जैसा की हमने पहले ही कहा है हमारी हवा, पानी, खाना, जमींन प्रदूषित हो चुकी है, इसे फिरसे ठीक करना होगा ।

Q.7 इसके फायदे क्या है **?** इसकी इकनोमिक वैल्यू क्या है **??**

Ans : (1) जो आर्गेनिक (जैविक) कूड़ा प्रदूषण फैलाता है, जिससे किड़े मकोड़े होते है उन्हें हम खाद में बदल देंगे, इससे यह फायदा होगा की खाद जब पौधोंको देंगे तो हरियाली भी बढ़ेगी एवंम स्वास्थवर्धक अन्न, सब्जियां, फल मिलेंगे । इसे हम "सकारात्मक ऊर्जा वृत्त" (पॉजिटिव एनर्जी सर्कल) कहते है।

1) हमारी हवा के शुद्धिकरण की शुरवात होगी ।
2) हमारा जल प्रदुषण मुक्त होगा ।
3) हमारी जमीन का प्रदुषण कम होने की शुरवात होगी ।
4) हमारा अन्न स्वास्थवर्धक होगा ।
5) जिससे हमारा पेट ठीक रहेगा और हम स्वस्थ एवंम बुद्धिमान होंगे यह बड़ी उपलब्धि होगी ।

(2) दूध देने वाली गाय का खर्च यदि उनके गोबर से, गोमुत्र से वसूल हो गया तो डेयरी का व्यवसाय फायदेमंद होगा, क्योंकि आज गाय का सब खर्च दूध पर ही लोड होता है । गोबर और गोमूत्र का कोई सोचता ही नहीं ।

(3) गाय का मांस सस्ता नहीं नुकसानदायक है । क्योंकि इसमें कोलेस्ट्रॉल की मात्रा ज्यादा होती है जो आपको बीपी या हार्ट अटैक का पेशेंट बना सकती है । पेटके विकार होते है । मॉर्डन साइंस के हिसाब से भी जो गाय

और बैल काटता है वह अक्सर बूढा या बिमार रहता है, उसका गोश्त स्वास्थ के लिए हानिकारक रहता है । जब गाय को काटते है तो ऑड्रिनालिन हार्मोन सिक्रिट होता है वह हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है । मुझे मुस्लिम स्कॉलर मित्रोंने बताया है, कि हादीश में फरमाया है की, "गायका दूध पियो इससे शिफा(फायदा) है, गायका घी खाओ इसमें दवा है, गायका गोश्त मत खाओ इसमें बीमारी है ।" कई इस्लाम धर्म गुरुओंका कहना है । हम हर उस इंसान से कहेंगे कि आप, गायका गोश्त खाने से पहले विचार करे की जो स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक है, वह खाना यदि कोई आपको खाने के लिए कहे तो वह आपका दोस्त होगा या दूश्मन । फिर गायका गोश्त खाए या नहीं खाए । यह आपकी मर्जी ...

(4) आज खेती के लिए बैल का प्रयोग कम हो गया है क्योंकि एक गलतफहमी है की बैल पोसाता नहीं है, एक काम करने वाला बैल इतना गोबर एवं गोमूत्र देता है की उसीमे उसका खर्च निकलता है और करीब २००० महीना बचता है । श्रम तो फोकट में है । इसे समझिये यह बहुत बहुत फायदेमंद सौदा है । १ अगस्त के नवभारत में बैलकी शक्तिसे कैसे बिजली बनाई जा सकती है उसके समाचार है । हम वैज्ञानिको, उद्योजकों से अपील करते है, हम सरकार से अपील करते है, हम किसानो से भी अपील करते है कि, इसका अभ्यास किया जाए ।

(5) दूध न देनेवाली गाय एवं काम न करनेवाले बैल का अर्थशास्त्र (२० गोवंश का यूनिट)

१) ता. 2-04-2015 को गूगल के अनुसार हमारे देश में 281 मिलियन याने 28.10 करोड़ गाय थी।

२) हम आजाद हुए तब हमारे देश में १२० करोड़ गाये थी।

३) एक देशी गाय / एक दिन में ४-५ किलो गोबर मिलता है। इसमें कृषि का कचरा एवं अन्य काचर करीब किलो मिलाकर केंचुआ खाद बनाया जाए तो ३५ - ४० दिन में बढ़िया १२-१५ किलो केंचुआ खाद बनाया जा सकता है , केंचुआ खाद नही बनाना हो तो प्राकृतिक खाद, गोबर गैस से प्राकृतिक खाद बनाया जा सकता है ।

a) इसका मतलब एक गाय से आप १२ कि. प्राकृतिक खाद प्रतिदिन पा सकते है ।

b)एक महीने में आपको १२ x ३० = ३६० कि. खाद मिलेगी ।

c) १ कि खाद की किमत आज ६ रु. किलो भी जोड़ते है तो यह ३६०x ६ = २१६०।

d) २० गाय से २० x २१६० = ४३,२०० /-

e) हर गोवंश से ५ कि गोमूत्र ।

f) १ गोवंश से १ महीने में १५० कि गोमूत्र ।

g) २० गोवंश से ३००० कि गोमूत्र १ महीने में । १० रु. लिटर से ३०,००० रुपये ।

h) कुल आय गोबर और गोमूत्र से ४३,२००+३०,००० = ७२,२००

i) केंचुआ खाद की विक्री १० कि रु. ५०० प्रति किलो = ५,०००

७७,२००

४) मासिक आय व्यय विवरण २० गाय के यूनिट का प्राथमिक लागत

२० गाय जो दूध नहीं देती है २० x ६००० = १२०००/-

१) २० गाय से खाद -

१२ कि/ प्रतिदीन x २०x३० = ७२०० कि दर ६ = ४३,२००.००

२) गोमूत्र + वर्मीवाश

२० गाय x ५ कि दर x ३० दिन ३००० कि दर १० = ३०,०००.००

३) केंचुए की विक्री १० कि x दर ५०० = ५०००.००

७३,२००.००

खर्च

१) २ आदमी ७००० प्रतिमाह २ x ७००० =	१४,०००.००
२) चारा १००० प्रति गाय /माह x २० =	२०,०००.००
३) ब्याज और दूसरे खर्चे -	
a) १,२०००० = १,२०,००० @१. ५ %	१,८००.००
b) दवा २०००	२,०००.००
c) शेड का खर्च २० x १००	२,०००.००
	३९,८००.००
प्रतिमाह शुद्ध नफा	७८,२००.००
	- ३९,८००.००
	३८,४००.००

दूध नहीं वाली गाय हमेशा ही दूध नहीं देती ऐसा नहीं है । उनमे से कुछ गाय फलती है और दूध भी देती है, उससे गोवंश भी बढ़ता है । गोबर एवं गोमूत्र से अनेक उत्पादन जैसे साबून, फिनाईल, किटकनाशक दवाईयाँ, शैम्पू, कैंसर की दावा, मछर भागने की अगरबत्ती धूप आदि चीजें बनाकर एवं बेचकर मुनाफा बढ़ाया जा सकता है । हम उपरोक्त खाद से पौधे बनाते है । वह भी एक फायदेमंद सौदा है। पदमश्री श्री सुभाष पालिकर जी के हिसाब से १ देशी गाय ३० एकड़ को लगाने वाला जिवामृत देती है जो जमीन की सोई शक्तियोंको जागृत कर सकता है । आप देशी गाय से मिलने वाले आय का हिसाब जोड़िए ।

(6) हमारे माननीय प्रधान मंत्रीजी से मैं नम्र निवेदन करता हूं की आपने स्वच्छ भारत का जो कार्यक्रम दिया है उसमे से आधे से ज्यादा

कचरा जैविक सेन्द्रिय मटेरियल रहता है उसे गोबर के साथ मिलाकर -

1) गोबर गैस तैयार किया जा सकता है जो आपके रसोई गैस की जगह काम में आ सकता है । यह घर घर में रसोई के काम में आ सकता है ।
2) इससे गाड़िया चलाई जा सकती है ।
3) इससे शुद्ध बिजली का निर्माण होगा ।
4) गोबर गैस बनाने के बाद जो मटेरियल मिलता है वह उत्तम दर्जे की प्राकृतिक खाद होती है ।
5) ८४ करोड़ टन गोबर एवं कचरे से कितनी गैस, कितनी बिजली, कितनी खाद बनेगी इसपर राजनेताओं को उद्योजकों को बहुत अच्छा अवसर है ।

अपने मुसलमान स्कॉलर भाइयोंसे निवेदन करता हूं की, आप मैंने जो बताया है वह सही है तो उसका प्रचार कीजिये ताकि कई गलतफहमियाँ दूर होगी भाईचारा बढ़ेगा । हमारे करोडो देशवासियों को अपने ही गाव में रोजगार मिलेंगा, गाव की शहरकी गंदगी कम होगी हर गाव के पास कुड़ेके ढीग लगे होते है जिससे गन्दगी फैलती है उससे हमें कम समय में उत्तम दर्जेकी सेंद्रिय कुदरती खाद बना देंगे ।

(7) आज हमारा कृषि साहित्य का आयात करीब ३ लाख करोड़ है,जो हमारी अर्थव्यवस्था पर भारी बोझ है और इस आयात से हम हमारे पैसोंसे ही हमारी हवा ख़राब कर रहे है, हमारा पानी, हमारी जमीन, हमारा खाना, हमारा पेट ख़राब कर रहे है । वह भी हमारे अपने ही पैसों से, वह बचेगा तो हम तंदुरुस्त रहेंगे ।

इससे क्या होगा ?

हम और हमारे बच्चे बुद्धिमान होंगे उसकी कीमत क्या ? हर साल यदि ३ लाख करोड़ का आयात कम होता है तो हमारा बैलेंस ऑफ़ ट्रेड हमारे फेवर में आ जायेगा, डॉलर की कीमत कम होंगी, डॉलर की कीमत कम होने से आयात सस्ता होंगा । भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत होंगी निर्यात में जो कृषि उत्पादनों मे रासायनो के अंश होने से माल रिजेक्ट हो जाता है वह नहीं होगा तो हमारा निर्यात बढ़ेगा । हमारी हमारे देश के बारे में सोच बदल जाएगी ।

क्या आप जानते है ?

क्या आप जानते है की न्युज़िलैंड जो एक प्रमुख दूध उत्पादक देश है । वहाँ के वैज्ञानिकोंको शॉक लगा जब पता चला की, उनकी गाय के दूध से कुछ खतरनाक बिमारियाँ होती है। जैसे कैंसर, डायबटीस, अल्ज़ाइमर, हृदय विकार आदि।

जो **बीटा कैसियो मॉर्फिन ७ (Beta Casio Marphine 7) BCM7** नामक द्रव्य से होती है, जो **बॉस टोरस (Bos Taurus)** याने युरोपियन गाय के दूध में पाया जाता है।

B.C.M.7 के बारे में ज्यादा अनुसंधान से पता चला है की, हमारी हिन्दुस्तानी गाय के दूध में यह वैषिले तत्व नहीं होता । और इसलिए हमारे गोवंश की मांग एकदम बढ़ रही है।

V.I.A. के एक प्रोग्राम में माननीय श्री सुनील जी मानसिंग का ट्रस्टी गो विज्ञान अनुसंधान केंद्र देवलापार के अनुसार शुरूशुरू में एक गीर गाय का सांड रु. ३ करोड़ में बिका था ।

सरकार क्या कर सकती है **??**

1) सरकार से विनंती है की फ़र्टिलाइज़र कण्ट्रोल आर्डर की धारा के अनुसार आपको गोबर खाद बेचने के लिए लाइसेंस लेना पड़ता है जो आम आदमी

एवं गोशाला के लिए अवव्हारिक है। उससे किसी का भी फायदा नहीं हुआ है उसे अविलंब हटाया जाए ।

2) किसान को कुदरती खाद बनाने की ट्रेनिंग दी जाए, जिससे गांव का शहर का कचरा जो गंदगी फैलाता है, वह सोने में बदल जाए । जिससे देश में प्रदुषण काफी काम हो जाएगा ।

3) गोमूत्र के उपयोग का प्रचार करे । खेतीमे गोमुत्र के फायदे गजब के है ।

4) सरकार की शक्ति, बहुत बड़ी होती है ।

गोवंश से जुड़े कुछ अद्भुत अनुभव

1) १३ अगस्त २०१५ को कोराडी के पावर प्लांट के डैम से इतना पानी छोड़ा गया जिससे जिस क्षेत्र में पानी गया वहाँ सैलाब आ गया।
हजारो एकड़ खेती पानी में पूरी दुब गई हमारे खेत में भी करीब ११ फिट पानी था इस पानी से हमारा बीज, खाद, पौधे, अवजार, सीडलिंग ट्रे मशीन, मोटर, एवंम जो जो सामान था वह सब बह गया।

2) गाये भी बह गई लेकिन चमत्कार ये गाये तैर कर एक ऊंची जगह पहुच गई दूसरे दिन सुबह सैलाब कम होने के बाद, गाये वापस आ गई और जो सामन बह गया था वह एक भी वापस नहीं मिला, करीबन दस लाख का नुकसान हुआ। यह सब बताने का उद्देश्य है की, किसान का सब कुछ बह भी गया तो फिर वह गोधन के सहारे फिरसे अपना काम शुरू कर सकता है । जबकी आधुनिक खेती में बही हुई कोई भी चीज वापस नहीं मिली ।

3) पांढुर्ना नामक शहर के पास में एक किसान रहते है जिनका निम्बू नागपुर के बाजार में सबसे उत्तम निम्बू माना जाता है । उनका कहना है, की वे अपने खेत

में सिर्फ गोबर और गोमूत्र का प्रयोग करते है । गोमूत्र से स्प्रे करते है । इस स्प्रे का फायदा उन्होंने बताया की जब गोमूत्र पेड़ पर रहता है तब वह किटनाशक का काम करता है, और बारिश होती है तो वह गोमूत्र बारिश के पानी के साथ जमीन पर आ जाता है । इस गोमूत्र को पीने से बड़ी संख्या में चीटियां और मकोड़े आ जाते है । ये मकोड़े अपने साथ में जमींन में रहने वाले अनेक कीड़े जो फसल को नुकसान पहुचाते है, उन्हें भी खा लेते है । कारण ये कीड़े उनका अन्न होते है । यह बगैर खर्चे का फायदेमंद प्रयोग है, यही बात यवतमाल जिले के श्री सुभाष शर्मा ने भी अनुभव की है । श्री सुभाष जी शर्मा काफी अच्छे तरीके से जैविक खेती करते है एवं उसका दमदार प्रचार भी करते है ।

इसके अलावा भी बहुत सारी बाते एवं चमत्कारी अनुभव है, वे और कभी या आपसे मुलाकात के वक्त चर्चा करेंगे । आप से भी विनंती है की, आपके अनुभव भी हमें भेजे । साथ में नाम, पता, फ़ोन नंबर भेजिए ।

यदि आपको मेरी बाते सही लगती है, तो गाय के दूत बनिए । एक्शन **लिजिये** बातोंसे कुछ नहीं होगा ।

आपके सुझाव भेजिए आइए भेंट करे, फ़ोन करे, ईमेल भेजे, या S.M.S. करे, या व्हाट्स अप करे। या जो भी साधन है उससे इसका प्रचार करे। यदि आप गाय के वैज्ञानिक एवं आर्थिक आधार पर, इन्सानियत के तौर पर, आर्थिक या वैज्ञानिक दूत बनना चाहते है तो -

1) मेल कीजिये - या
2) S.M.S. कीजिये 9822203950 और 9326366791
3) व्हाट्स अप कीजिये – 9822203950
4) ईमेल – ozjajodia@gmail.com
5) Log on - किजिये या,

26/08/2016

पत्र लिखिए - कृषि विज्ञान आरोग्य संस्था
धनवटे आश्रम, शनी मंदिर रोड, सीताबर्डी,
नागपूर – 440012

आइए हम सब मिलकर प्रदुषण मुक्त, स्वस्थ, समृद्ध देश एवं इंसानियत का निर्माण करे। हमारा फ़ोन नंबर : 9822203950, 0712-2564596 समय सुबह 10:30 से शाम 18:30 तक लंच – 13:00 से 14:30 ।

अपना अनुभव है आप ज्ञान बाटे ।

खजाने तो बेइंतेहा है यारो हमारे पास। क्यों गैरोंके आगे हाथ फैलाते हो ?

मालामाल बनाना है, स्वस्थ रहना है, बुद्धिमान बनना है तो गाय को समझिये और गाय के साथ और भी कई बाते है जिसे समझके हम -

१) मालामाल

२) स्वस्थ

३) बुद्धिमान हो सकते है वह आगे के एपिसोड में।

मैं हर भारतवासी से आवाहन करता हूं, अपनी शक्ति को अपने खजाने को जानो और दुनिया पर राज करने के लिए तैयार हो जाओ, सिर्फ बातोंसे कुछ नहीं होगा कठीन मेहनत, आत्मविश्वास, सत्य, संकल्प आदि गुणोंको अपनाने से कुछ भी मुश्किल नहीं।

खुद ही को कर बुलंद इतना कि हर तक़दीर लिखने से पहले खुदा बंदे से बुलाकर पूछे बोल तेरी रज़ा क्या है ? जयहिंद !!!